भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या : 1301
उत्तर देने की तारीख : 25.07.2022

उच्च शिक्षा में हिंदी/संस्कृत भाषा को बढ़ावा देना

1301. श्री अरुण कुमार सागर:

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद हिंदी और संस्कृत को एक विषय के रूप में चुनने वाले छात्रों की संख्या घट रही है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं; और
(ग) सरकार द्वारा देश में उच्च शिक्षा में हिन्दी और संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं; उठाए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर
शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(डॉ. सुभाष सरकार)

(क) से (ग) केंद्र और राज्यों दोनों के तहत हिंदी एवं संस्कृत बहुत सारी शैक्षणिक संस्थाओं में माध्यमिक स्तर के बाद अध्ययन विषयों के रूप में पढ़ाई जाती हैं। माध्यमिक स्तर के बाद कितने छात्र हिंदी और संस्कृत लेते हैं इसका कोई केंद्रीकृत डाटा नहीं है। शिक्षा मंत्रालय ने हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र की स्थापना की है। हिंदी बहुत सारे केंद्रीय विश्वविद्यालयों में एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए शिक्षा मंत्रालय के तहत तीन संस्थान अर्थात् केंद्रीय हिंदी संस्थान (केएचएस, आगरा) केंद्रीय हिंदी निदेशालय (सीएचडी), नई दिल्ली और वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (सीएसटीटी), नई दिल्ली कार्य कर रहे हैं।

सरकार तीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों i) केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली, ii) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और iii) राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति और 17 केंद्रीय विश्वविद्यालय, जिनमें संस्कृत के अलग-अलग विभाग स्थापित हैं, के माध्यम से संस्कृत को बढ़ावा दे रही है। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली अपने 12 परिसरों, 26 आदर्श संस्कृत महाविद्यालय/आदर्श शोध संस्थान (एएसएम/एएसएस) और 62 अनुदानग्राही संबद्ध संस्थानों के साथ सभी स्तरों पर संस्कृत को लोकप्रिय बना रहा है। शिक्षण के माध्यम से संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के अलावा, सरकार केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के माध्यम से आदर्श संस्कृत विद्यालय/महाविद्यालय/शोध संस्थान की स्थापना, सभी उम्र के लोगों

के बीच प्रतियोगिताएं आयोजित करना, विद्वानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, वरिष्ठ विद्वानों को शास्त्र चूड़ामणि के माध्यम से नकद पुरस्कार से सम्मानित करना और उन्हें रेफरल विद्वानों के रूप में शामिल करना, प्रख्यात के साथ-साथ युवा विद्वानों को राष्ट्रपति पुरस्कार देने जैसी बड़ी संख्या में योजनाएं भी लागू करती है।

****